Result Mitra Daily Magazine

ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती एवं अजमेर शरीफ दरगाह

➢ चर्चा में क्यों ?

- हाल ही में 27 नवंबर को अजमेर (राजस्थान) की एक अदालत में "हिंदू सेना" द्वारा दायर एक याचिका स्वीकार कर ली है, जिसमें दावा किया गया है कि प्रतिष्ठित अजमेर शरीफ दरगाह के नीचे एक "शिव मंदिर" है एवं इसका पता लगाने के लिए पुरातात्विक सर्वेक्षण किया जाना चाहिए।
- भारत के ज्यादातर दरगाह सूफी संतों के कब्रों पर बनाए गए निर्माण है।
- प्रतिष्ठित अजमेर शरीफ दरगाह जो कि भारतीय उपमहाद्वीप में सूफीवाद के प्रसार करने वाले महत्वपूर्ण शख्सियतों में से एक ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती का मकबरा है।

➢ ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती :

- ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती का जन्म 537 हिजरी संवत यानि 1143 ई. में पूर्व पर्शिया(ईरान) के सिस्तान क्षेत्र में हुआ था।
- वर्तमान में सिस्तान क्षेत्र अफगानिस्तान–पाकिस्तान के सीमा के अंतर्गत आता है।
- ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती फारसी मूल के सुन्नी मुसलमान थे।

➢ आध्यात्मिक यात्रा :

- 14 वर्ष की अवस्था में अनाथ होने के बाद ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की मुलाकात एक भटकते फकीर इब्राहिम कांदोजी से हुई।
- इब्राहिम कांदोजी ने मोइनुद्दीन चिश्ती को बुखारा और समरकंद (अफगानिस्तान) के मद्रास में धर्मशास्त्र, व्याकरण, दर्शन एवं नैतिकता का अध्ययन करने के लिए भेजा।
- 20 वर्ष की उम्र में अध्ययन समाप्त करने के बाद इब्राहिम कांदोजी ने ख्वाजा मोइनुद्दीन को चिश्ती संप्रदाय के श्रद्धेय सूफी गुरु ख्वाजा उस्मान हारूनी तक पहुंचाया।
- ख्वाजा उस्मान हारुनी ने ख्वाजा मोइनुद्दीन को अपना शिष्य स्वीकार किया और उन्हें दीक्षा दी।
- ख्वाजा उस्मान हारुनी ने मोइनुद्दीन को चिश्ती आध्यात्मिक वंश श्रृंखला में दीक्षित किया।
- चिश्ती आध्यात्मिक दीक्षा हासिल करने के बाद उनका नाम ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती पड़ गया।

➢ ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती का अजमेर का गरीब नवाज बनना :

- ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती ने अपने अफगानिस्तान यात्रा के दौरान कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी को अपना पहला अनुयायी बनाया।
- कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी को अपने साथ लेकर ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती मुल्तान चले गए, जहां वे 5 वर्ष तक रहे।
- मुल्तान में उन्होंने संस्कृत का अध्ययन किया और फिर लाहौर चले गए।
- लाहौर में मोइनुद्दीन चिश्ती ने विद्वाना हुजाविरी की दरगाह में ध्यान लगाया।
- लाहौर के बाद मोइनुद्दीन चिश्ती पहले दिल्ली और फिर बाद में पृथ्वीराज चौहान की राजधानी अजमेर चले आए।
- अजमेर पहुंचने के समय मोइनुद्दीन चिश्ती की उम्र 50 वर्ष थी।
- वर्ष 1192 में तराइन (वर्तमान हरियाणा) की दूसरी लड़ाई में घोर के मुहम्मद से हारने के बाद चौहान वंश की समाप्ति हो गई।
- तराइन की दूसरी युद्ध के दौरान मुहम्मद घोर की सेना ने खूनी आतंक मचाते हुए अजमेर को लूटकर तहस-नहस कर दिया एवं वहां की जनता को काफी प्रताड़ित किया।
- अजमेर की जनता की दुर्दशा देखकर ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती ने अजमेर में ही रख कर वहां के लोगों की मदद करने का फैसला लिया।
- अजमेर में ही ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती ने उम्मतुल्ला नामक महिला से शादी करके वहीं झोपड़ी बनाकर जरूरतमंद लोगों की मदद करना शुरू किया।
- अजमेर के लोगों की निस्वार्थ भाव से सेवा करने एवं उनकी उदारता के अद्भुत कार्यों के कारण वहां के लोगों ने उनको गरीब नवाज या गरीब के दोस्त की उपाधि दी।

- मोइनुद्दीन चिश्ती ने गरीबों के भोजन के लिए लंगरखाना खो, जिसकी देख–रेख उनकी बीवी उम्मतुल्ला करती थी, जहां हर धर्म के लोगों को खाना खिलाया जाता था।
- समानता, दैवीय प्रेम और मानवता की सेवा पर जोर देने वाली उनकी शिक्षा ने मोइनुद्दीन चिश्ती को सांप्रदायिक सीमाओं से परे बना दिया।

➢ मोइनुद्दीन चिश्ती की पारलौकिक विरासत :

❖ सूफीवाद

- सूफीवाद का उदय सातवीं और दसवीं शताब्दी के बीच दुनिया में बढ़ते मुस्लिम समुदाय के आतंक के प्रतिकार में हुआ।
- सूफियों ने इस्लाम को भक्ति पूर्ण रूप में अपनाया।

❖ चिश्तीवाद या चिश्तिया

- चिश्तीवाद या चिश्ती संप्रदाय की शुरुआत वर्ष 930 ई. के आसपास अबु इसहाक शमी द्वारा अफगानिस्तान के हेरात प्रांत में की गई।
- भारतीय उपमहाद्वीप में चिश्ती संप्रदाय का प्रसार का श्रेय ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती को जाता है।
- भारतीय उपमहाद्वीप में ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती के पहले अनुयायी कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी ने दिल्ली में चिश्ती संप्रदाय की आधारशिला रखी।
- दिल्ली सल्तनत के तीसरे सुल्तान इल्तुतमिश के आध्यात्मिक गुरु के रूप में बख्तियार काकी दिल्ली क्षेत्र के आध्यात्मिक जीवन में एक केंद्रीय व्यक्ति बन गई।
- ऐसा माना जाता है कि बख्तियार काकी के नाम कुतुब मीनार का नाम रखा गया और इनका दरगाह कुतुब मीनार के बगल में महरौली में स्थित है।
- काकी के शिष्य बाबा फरीदुद्दीन (1173–1265)ने चिश्ती संप्रदाय की शिक्षाओं को पंजाब क्षेत्र में फैलाया।
- ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती के द्वारा बाबा फरीदुद्दीन को गंज शक्कर या मिठास का खजाना नाम दिया गया था।
- ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती के अन्य शिष्यों में हमीदुद्दीन नागोरी थे, जिन्होंने नागौर में आध्यात्मिक नेता के रूप में कार्य किया।
- ख्वाजा मोइनुद्दीन के बाद निजामुद्दीन औलिया (1238–1325)ने एवं उनके उत्तराधिकारी चिराग देहलवी (1274–1356) ने मोइनुद्दीन के शिक्षा को आगे बढ़ाया।
- चिश्ती संप्रदाय को हमेशा मुगल शासकों के संरक्षण में देखा जा सकता है।

- विभिन्न इतिहासकारों के अनुसार मुगल बादशाह अकबर मोइनुद्दीन चिश्ती से काफी प्रभावित थे, जिन्होंने कई बार मोइनुद्दीन चिश्ती के दरगाह की तीर्थ यात्रा की एवं उनके मकबरे के सौंदर्यीकरण सहित अजमेर शहर को पुनर्जीवित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।
- वर्ष 1236 ई. में ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती के मृत्यु के बाद मुगल बादशाह हुमायूं ने अजमेर शरीफ दरगाह का निर्माण करवाया।
- मुगल शाही परिवार के सदस्यों द्वारा अजमेर शरीफ दरगाह की तीर्थ यात्रा ने अजमेर को लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।
- ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की शिक्षाएं आज भी भारत में प्रेम, करुणा और समावेशिता पर धार्मिक रूप से विविधता वाले क्षेत्रों में गहराई से प्रतिनिधित्व करती है।
- ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती ने इस्लामी आध्यात्मिकता के द्वारा भारतीय संस्कृति के साथ एकीकरण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।